प्रोत्साहन

मेरे संसोधन कार्य में कई प्रविष्टि विद्वानों ने मेरा मार्गदर्शन किया। उन्होंने सब्र प्रथम में अपने मार्गदर्शक डॉ. ग. ह. तालाबेकर की विशेष आदर्शा है। उन्होंने मुझे मेरे विषय में तत्त्वात्मक संचय करने में मेरा मार्गदर्शन किया।

श्री. न. द. क्षेत्रजीय ने मुझे बहुत ही सहायक दिया। उन्होंने कई प्रकरणों के संबंध में सिखने के लिये मेरा मार्गदर्शन किया। उनकी बुद्धिव्यथा के वाज्जूद भी उनका सहायता मेरे लिये सर्वोत्तम है।

मेरे संसोधन के दौरे के अन्तर्गत उदयपुर के पैलेस में श्री. दीपक शर्मा जी ने मुझे मीरा के विषय में संपूर्ण ज्ञान दिया। वहाँ मैं उनसे कई पुस्तकें बिखरे एवं पत्रिकाएं प्राप्त की।

विद्वानों की आज भी मीरा के शोभायुग कारण है।

'मीरा कला मंदिर' उदयपुर से भी कई हसतलिखित प्रतियों, चित्र एवं राजस्थानी संगीत के कैसे प्रदर्शन किये। प्रशिक्षण के प्रदर्शन के लिये मीरा के ज्ञान संघ के संस्थापक गीता सुनी जो मेरे विषय के लिये काफी सहायक शिखा हुई।

नागरी प्रारंभिक सभा कारण में मुझे पुरुषों ने हस्तलिखित डाकोटा प्रतियों देखने को मिला।

वाराणसी से मुझे मीराबाई पर कई पुस्तकें प्राप्त हुई।

स्वयं डॉ. रामकुमार बयं ने मिलने में इलाहाबाद गये परतू स्वास्थ्य विभाग के कारण मेरे उनसे साक्षात्कार नहीं हो सका। उनके प्रदर्शन मेरे विषय के राजाहन की और मार्गदर्शन किया।

अंतः उनकी भी मेरी आदर्शा है।

उपमीती दूसरी खाड़ियाकर की में विशेष रूप से आभारी हूँ। जिन्होंने मुझे पुनः शैक्षणिक निषेध के कारण होने के लिये प्रोत्साहन दिया। उन्होंने मेरे प्रोत्साहन एवं साहित्य से मैंने 98 वर्ष पत्तित प्राप्त पत्रीका में अपने कदम रखे और उनके आशीर्वाद से मैंने पी.एच.डी. की भर्तिर् भी तय की।

अंतः उनकी में मन:पुरस्कार धन्यवाद देती हूँ।

डॉ. विक्रम खाड़ियाकर तथा उनके परिवार की में विशेष रूप से प्रसन्न हूँ। उन्होंने मेरी निराशा को आशा में बदलकर मेरा उत्ताह बढाया। श्री. काशिकाजी ने मेरे सोह-प्रवक्त के कई बजाओं को रचनात्मक प्रदर्शन की। कुछ पारंपरिक स्वर लिखित के कैफैट में से लिखी बात करने का श्रेय आपको ही है। इसके मैंने सोह-प्रवक्त के अंतर्गत परिषद में दिया है। भारत मेरे पास है अंतः उनकी महत्ता से सर्वोत्तम है।

मेरा सोह-प्रवक्त को टैप देकरने मेरे डेकाट की में मुझे बहुत आदर्शा। उन्होंने मेरे विषय को दृष्टियास्तित रौंदी से टैप किया। जिससे विषय को समझने में अधिक कठिनाई न हो।

अंतः मन:पुरस्कार को मेरा धन्यवाद देती हूँ।

शोध-प्रवक्त में चित्रोंसे अधिक स्वभाविकता आती है। संस्कृत जैसे विषय ने तो चित्रों का सहायता बतू तो अधिक है। बालकत्वप्रदीप सुन्दर के प्रभाव विषयक ने मेरी खोजकारी है। जिन्होंने इसके सुदर एवं साधुदिवस मेरे विषय की शौक बढाई। चित्रों के हृदय में प्रसंसक बनाया।

अंतः मेरे विषय के अधिक वर्णन गौरवी है।

इसके अतिरिक्त प्रेम-प्रवक्त एवं अप्रेम-प्रवक्त रूप से अन्य कई विद्वानों का मुझे लाख धन्यवाद है।

अंतः में एक बार पुनः अपने मार्गदर्शक डॉ. ग. ह. तालाबेकर को अभिव्यक्ति करते हुए अपना शोध प्रवक्त आपके सम्मुख रखती हूँ।

dhanvada!